मकान लिया था, वहाँ ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में बहुत ही ग़लत भ्राँतियाँ फैली हुई थीं। जब पड़ोसियों को पता चला कि यह वहाँ जाता है तो उन्होंने मेरे माता-पिता के कान भर दिये, कहा कि यह वहाँ जायेगा तो घर-बार छोड़ देगा आदि-आदि। पर जिसको स्वयं भगवान ने अपना बना लिया हो और बचपन की प्रभु-मिलन की प्यास एक दृष्टि में बुझा दी हो, उसे भला अमृत-पान करने से कौन रोक सकता है! हालाँकि मैंने अभी सात दिन का ज्ञान का कोर्स भी पूरा नहीं किया था पर अंतरात्मा ने सच्ची शान्ति अनुभव कर ली थी। दिल और दिमाग ने प्रभु को पहचान लिया था। **समाज में बहुत-से लोग लोक-लाज के कारण प्रभु-मिलन के सच्चे सुख से वंचित रह जाते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि यह लोक-लाज केवल ईश्वरीय मार्ग में ही बाधा बनती है। कई ऐसे कर्म भी हैं जिनको करने में लोक-लाज आनी चाहिए पर उन्हें तो मानव धड़ल्ले से कर लेता है। विचार कीजिए, अपशब्द बोलना, गुस्सा करना, लोभ-मोहवश होना, कुदृष्टि रखना, शराब, तंबाकू का सेवन करना – वास्तव में तो शर्म इनको करने में आनी चाहिए। ईश्वर का बनने में, उसकी ओर कदम बढ़ाने में कैसी शर्म! लेकिन ग़लत संगत में पड़े बच्चों को देख समाज आँखें बंद कर लेता है और अच्छे मार्ग पर जाते व्यक्ति को देख समाज चिन्तित हो उठता है।** मैंने समाज से डरकर इस मार्ग को नहीं छोड़ा क्योंकि इस मार्ग पर चलकर मुझे अनगिनत फायदे हुए। फिर मैंने युक्ति से जाकर ज्ञान का कोर्स शुरू किया तो एक-एक ज्ञान की बात जैसे कि दिल की गहराई में उतरने लगी और उसे व्यवहारिक जीवन में अमल करना शुरू किया।

विरोधों का सामना

मुझमें क्रोध का संस्कार बहुत ज्यादा था। लेकिन जैसे ही ज्ञान का कोर्स किया, मैंने स्वयं को पहचान लिया कि मैं शान्ति के सागर की संतान शान्त स्वरूप आत्मा हूँ। शान्ति की अनुभूति होते ही क्रोध का संस्कार अंत:करण से विदाई ले गया। मेरा यह बदलाव मेरे भाई-बहनों को बहुत अच्छा लगा लेकिन **आज का समाज विवेक की आँखों पर मानो पट्टी बाँधे हुए है। अच्छी बातें उसकी बुद्धि से वैसे ही फिसल जाती हैं जैसे चिकने घड़े पर से पानी। वह इतिहास-पुराणों के महान लोगों के गीत गाता है पर जब उसके सामने कोई अच्छा बनने लगता है तो टांग भी खूब अड़ाई जाती है। समाज की इस प्रवृत्ति के कारण, दो-तीन वर्ष तक मुझे बहुत विरोधों का सामना करना पड़ा।** पर खुदा दोस्त की मदद मुझे युक्ति से इन बंधनों पर विजय दिलाती रही। मैंने सुन रखा था, लगन की अग्नि विघ्नों को समाप्त कर देती है। मैंने अपनी परमात्म याद की लगन को अग्नि रूप दे दिया। सारा दिन बाबा को याद करता रहता। कभी-कभी तो उसकी याद में आँसू भी आ जाते कि हे भगवान, आप इतने वर्षों के बाद मिले तो भी यह दुनिया आपका सच्चा ज्ञान सुनने नहीं देती है।

'मैं तेरे साथ हूँ'

मेरा मन प्रभु-प्रेम से हटाने के लिए कई प्रयोग किये गये। मेरे पर पहरा लगा दिया गया। एक डॉक्टर ने सलाह दी कि इसको करंट के एक-दो शॉक दे देते हैं, इससे इसका ब्रेन ठीक हो जायेगा पर इसमें इसकी संपूर्ण याददाश्त जाने का खतरा है। जब मेरे से इस बारे में बात की गई **तो मैंने कहा, आज़मा कर देख लो। मीरा के लिए भी तो ज़हर का प्याला अमृत हो गया था, मैं शरीर छोड़ सकता हूँ लेकिन हाथ आए भगवान को नहीं।** पर ऐसा कुछ नहीं किया गया। मेरी ईश्वरीय लगन को छुड़ाने के लिए मुझे पैतृक गाँव में पढ़ाई के लिए भेजने की योजना बनाई गई, वहाँ 35 कि.मी. तक कोई आश्रम नहीं था। लेकिन प्रभु की मदद ऐसी रही कि दाखिले के समय परिवार वालों का मन बदल गया, मुझे गाँव में पढ़ाने की योजना धरी की धरी रह गई। फिर उन्होंने मुझे ऋद्धि-सिद्धि जानने वाले चाचाजी के पास चार-पाँच मास के लिए छोड़ दिया और कहा कि आप इसकी बुद्धि बदल दो ताकि इसके सिर से ज्ञान का भूत उतर जाए। एक बार तो मुझे डर लगा क्योंकि तब तक ज्ञान-योग की इतनी परिपक्वता नहीं आई थी। जब रात को